SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st year SESSION – 2021-2023

SUBJECT - Language across the Curriculum C-4

TOPIC NAME – UNIT-1 : भाषा अध्यापन के सिद्धान्त (principle of Teaching)

DATE - 14-01-21

भाषा अध्यापन का सिद्धान्त

शिक्षण ⇒ शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक कम अनुभवी व्यक्ति और एक अधिक अनुभवी व्यक्ति के बीच ज्ञान, जानकारी, अनुभव का प्रवाह अधिक अनुभवी व्यक्ति से कम अनुभवी व्यक्ति के तरफ होता है।

- इस प्रवाह के लिए एक अत्यावश्यक माध्यम के रूप में कार्य करने वाले घटक शिक्षण सिद्धान्त, शिक्षण सूत्र, शिक्षण सहायक सामग्री और शिक्षण विधियाँ होते हैं।
- शिक्षण एक त्रि-आयामी प्रक्रिया है, जिसमें आयामों के रूप में अध्यापक, छात्र और विषय-वस्तु होते हैं।

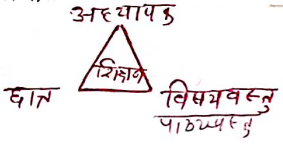

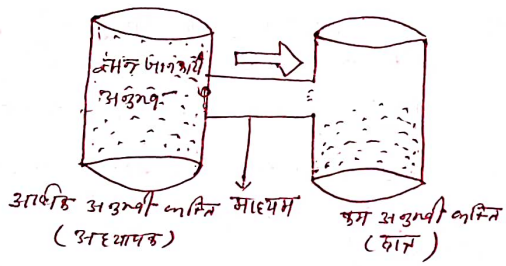

भाषा शिक्षण के सिद्धांत ⇒

Principle of action

(1) क्रियाशीलता का सिद्धान्त ⇒
- इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य 'करके सीखना'।
- शिक्षार्थी जब करके सीखता है तब उसका ज्ञान स्थायी हो जाता है।
- यह सिद्धान्त शिक्षार्थियों में वास्तविक अधिगम को बढ़ावा देता है।
- इस सिद्धान्त से शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान के लिए क्षमता का विकास होता है।
- शिक्षार्थी जितना ज्यादा क्रिया-कलापों में लिप्त होगा ज्ञान उतना ही बढ़ेगा।
- यह सिद्धांत शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष हस्तपरक अनुभव कराता है।
- इस सिद्धान्त से अधिगम सक्रिय एवं सार्थक होता है।
- इसमें शिक्षार्थियों में स्वयं सीखने, स्वअध्याय और अवलोकन कौशलों का विकास होता है।

Principle of Interest

(2) रुचि का सिद्धांत ⇒
- इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के प्रति रुचि पैदा करना। उनमें जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- इसमें अध्यापक विभिन्न प्रकार के किस्से-कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ आदि को भाषा के अध्ययन में शामिल कर सकता है।
- इसमें शिक्षार्थियों का अमोद-प्रमोद होता है।
- इससे कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास होता है।
- इसलिए भाषा की कक्षा में भाषा शिक्षण को इस प्रकार की विषय-वस्तु का चयन करना चाहिए जिससे बालक को विषय नीरस न लगे।

Principle of Inspiration, Motivation

(3) प्रेरणा, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त ⇒
- प्रेरणा किसी भी शिक्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु होता है।
- अभिप्रेरणा वह सिद्धान्त है जो शिक्षण को लक्ष्य निर्देशित बनाता है।
- अभिप्रेरणा, शिक्षार्थी को आंतरिक बल प्रदान करती है, जिससे वह निरंतर क्रियाशील बना रहता है।
- इससे अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।

principle of planning

(4) नियोजन का सिद्धान्त ⇒ • इस सिद्धान्त के अन्तर्गत शिक्षण की एक योजना बनानी चाहिए, तत्पश्चात शिक्षार्थियों को अधिगम कराना चाहिए।

• इस सिद्धान्त के अन्तर्गत शिक्षार्थियों क्षमताओं, योग्यताओं आदि का ध्यान रखना चाहिए।

• इस सिद्धान्त में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:
- कार्य विश्लेषण
- शिक्षण उद्देश्यों की पहचान
- अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण

principle of stated goals

(5) निश्चित उद्देश्यों का सिद्धान्त ⇒

• इस सिद्धान्त के अन्तर्गत लक्ष्य निर्धारित अधिगम कराया जाता है।

• जब शिक्षार्थी को यह पता होता है कि उसके अधिगम का लक्ष्य क्या है तब वह रुचि के साथ अधिगम करता है।

principle of relate life

(6) जीवन से संबंधित करने का सिद्धान्त ⇒

• बाल मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो विषय एवं क्रियाएँ बच्चे के जीवन से संबंधित होती है, उन्हें बालक आनंदपूर्वक व आसानी से सीख लेता है।

• हिन्दी शिक्षण में शिक्षक गद्य, पद्य, कहानी, नाटक रचना, व्याकरण आदि का ज्ञान बच्चों को देता है।

• विद्यार्थी के दैनिक जीवन से संबंधित उदाहरण देकर आसानी से समझ लेते है।

• अत: बच्चों को उनके खेल-खिलौने, पशु-पक्षी, कथा-कहानी आदि से शिक्षण का संबंध बनाते हुए पढ़ाना चाहिए।

principle of individual difference

(7) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त ⇒ शिक्षण देना चाहता है।

• मनोविज्ञान व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर

• इसमें सभी छात्रों की रुचि, बुद्धि, कार्य करने की क्षमता, एक जैसी नहीं होती।

• इसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से भिन्नता पाई जाती है।

• एक ही कक्षा में छात्रों के वैयक्तिक विभिन्नता पाई जाती है, कोई छात्र शुद्ध-(हिज्जे गलतियाँ) उच्चारण नहीं करता, किसी का लेख स्पष्ट नहीं होता, किसी को वाचन ठीक नहीं, इसलिए अध्यापक को इन सबकी वैयक्तिक विभिन्नता एवं कठिनाईयों को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

• छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाईयों का निवारण करना चाहिए।

principle of frequency, Repeat

(8) आवृत्ति का सिद्धान्त ⇒ • हिन्दी सिखने में आवृत्ति का बहुत बड़ा महत्व है।

• सीखी हुई बात को जितना अधिक दोहराया जाएगा, वह उतनी ही अधिक देर तक याद रहेगी।

• बच्चों को जो कुछ भी पढ़ाया जाए उसकी आवृत्ति उसी समय उसी दिन कर लेना चाहिए।

• कुछ विद्वान इस सिद्धान्त को "प्रयोग का सिद्धान्त" कहते हैं।

principle of teaching maxims

(9). शिक्षण सूत्रों का सिद्धान्त ⇒ • शिक्षण के कुछ समान्य सूत्र है जिनके अनुसार शिक्षण कार्य करने से बच्चों को सीखने में सरलता, सुगमता और स्थायित्व प्राप्त होता है।

• जैसे - सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, विशिष्ट से समान्य की ओर, आगमन से निगमन की ओर।

• शिक्षण में इन सूत्रों के ~~कारण~~ आधार पर पालन करने से शिक्षण अधिक प्रभावकारी होता है।

(10) principle of Association.
साहचर्य का सिद्धान्त ⇒ • बच्चा दूसरो को सुनकर बोलना तो सीखते ही रहते हैं परन्तु इस प्रकार सीखे गये शब्दों को समझने के लिए साहचर्य का होना आवश्यक है।
• बच्चा माँ को माँ या मम्मी कहने के साथ पहचानना और समझना तभी सीख सकेगा जब शब्द (माँ) के उच्चारण के साथ स्वयं माँ को और पिताजी या पापा के उच्चारण के साथ स्वयं पिता को भी देखें।
• इस प्रकार शब्दोच्चारण और वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष दोनो का साथ-साथ अर्थात साहचर्य होने से ही बच्चो को उस शब्द की समझ और पहचान हो सकेगी।
• इसी प्रकार अन्य शब्द दूध, पानी, चिड़िया, कुत्ता, बिल्ली आदि को दिखाकर इन शब्दों को बोलने से वह इन शब्दों को समझने लगता है और इन वस्तुओं को देखकर उनका नाम उच्चारण करना सीख जाता है।
• यह सब सहचर्य के सिद्धान्त की ही महिमा है कि बच्चे आरम्भ में लिपि का ज्ञान भी अक्षर 'अ' की आकृति के साथ-2 अमरूद का चित्र भी साथ से बना हुआ देखते हैं।

child principle of Child Centered
(11) बालकेन्द्रिता का सिद्धान्त ⇒ • शिक्षण का केन्द्र बालक है।
• बालक की स्वभाव, क्षमता, रूची स्तर आदि का ध्यान रखकर शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

principle of colloquial theory
(12) बोलचाल का सिद्धान्त ⇒ • भाषा शिक्षण की पुरानी पद्धति के अनुसार, कक्षा में अध्यापक आता था, पाठ को पढ़ाता था, धाराप्रवाह बोलता था, कक्षा के बालक मूक श्रोता बनकर सुनते थे, परन्तु कक्षा का वातावरण शान्त हो, अध्यापक सक्रिय और बालक बहरे, गूंगे जैसे बैठे हो, तो भाषा-शिक्षण कदापि प्रभावकारी नही होगा।
• इसी कारण आज के शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने बोलचाल के माध्यम से भाषा की शिक्षा पर बल दिया है। बोलचाल के शिक्षण में दो बातें मुख्य है:— 1. कानों द्वारा सुनना 2. मुंह द्वारा बोलना।

principle of Selection.
(13) चयन का सिद्धान्त ⇒ • हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए कब, किस सिद्धान्त या पद्धति का सहारा लिया जाए, इसकी सटीक जानकारी अध्यापक को होनी चाहिए।
• किसी पाठ को किस रूप में प्रस्तुत करके छात्रों को सरल एवं सहज ग्राह्य बनाया जाये।

⇒ पियाजे के अनुसार सभी बालक संज्ञानात्मक विकास के 4 चरणो से गुजरते है।
⇒ चोम्स्की के अनुसार बच्चों में जन्मजात भाषिक क्षमता होती है, लेकिन जिन पियाजे ने इसका विरोध किया था।

भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

① संज्ञानात्मक (ज्ञानात्मक) ⇒

ज्ञान, अवबोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन

② भावनात्मक पक्ष ⇒ चरित्र निर्माण, व्यवस्थापन, अनुशासन, आदरण
↳ भाव से भरा हुआ या हृदय को प्रभावित करने वाला

③ क्रियात्मक पक्ष ⇒ शारीरिक, गति, व्यवहार, वाणी, शोध

④ कौशलात्मक पक्ष ⇒ पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना

⑤ सृजनात्मक पक्ष ⇒ निर्माण, सृजन, साहित्य

⑥ कल्पनात्मक उद्देश्य ⇒ मानसिक विकास, संग्रहण क्षमता।

① संज्ञानात्मक या ज्ञानात्मक उद्देश्य ⇒ • इससे छात्रों में मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा व्यवहार परिवर्तन किये जाते है।
• विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों के माध्यम से ज्ञानात्मक पक्ष का विकास करने का प्रयास किया जाता है।
– ज्ञानात्मक उद्देश्यों के माध्यम से निम्नलिखित ज्ञान का अवबोध होते है:-

a ज्ञान – इसके तहत छात्रों में शब्दों, तथ्यों नियमों, सूचनाओं व सिद्धांतों की सहायता से उनके ज्ञान को विकसित किया जाता है। उनके ज्ञान को विकसित करने के लिए सिद्धांतो नियमों मानदण्डों एवं वर्गीकरण का स्मरण एवं पहचान कराने के लिए आवश्यक परिस्थितियों की पहचान एवं निर्माण किया जाता है। उन्हे पाठ्यवस्तु से संबंधित विशिष्ट ज्ञान दिया जाता है।

b बोध – बोध के अन्तर्गत भी ज्ञान निहित होता है। बोध से तात्पर्य है, नवीन ज्ञान का विद्यार्थियों की समझ में आना इस क्रिया के दौरान शिक्षक अपने अनुभवों का प्रयोग ज्यादा-से-ज्यादा करते है।

c प्रयोग d विश्लेषण ⇒ विभक्त या खण्ड-खण्ड करना e संश्लेषण ⇒ इसका अर्थ इकट्ठा या निर्माण करना।

② ~~कल्पना~~ कल्पनात्मक उद्देश्य ⇒ • छात्रों की मानसिक विकास करना एवं कल्पना करना